Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 SHISRRJ | Volume 7 | Issue 5
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

हिंदी में समलैंगिक एवं किन्नर साहित्य

संजय कुमार यादव
Researcher, Haryana, India

Article Info

Accepted : 03 Sep 2024
Published : 25 Sep 2024

Publication Issue :
September-October -2024
Volume 7, Issue 5

Page Number : 01-04

शोधसारांश:- यदि बात की जाए हिंदी साहित्य के इतिहास की, तो इसमें साहित्य के पढ़ने से पूर्व ही इतिहास अपना परिचय देते हुए स्पष्ट रूप से संकेत दे देता है कि साहित्य जनता और समाज का प्रतिबिंब है, जिसमें समाज में हो रही घटनाओं की छाप देखने को मिलती है। लेकिन अगर गहराई से बात की जाए, तो हमारा साहित्य अपनी साहित्यिक प्रवृत्तियों की दृष्टि से नारीवाद, आदिवासी, अल्पसंख्यक और दलित विमर्श के सैद्धांतिक ढांचे में बंधा हुआ दिखाई देता है। इनके अलावा, हमारे समाज में एक तीसरा समुदाय भी है, जिसे समाज में प्राचीन समय से उपस्थित होने के बाद भी बड़ी चालाकी के साथ समाज से अलग कर उनके अस्तित्व को कोई महत्व न देकर नकार दिया जाता है। परंतु स्वयं को सभ्य और समाज हितैषी समझने वालों ने भी उन्हें कभी नहीं अपनाया, बल्कि उनकी पीड़ा को समझे बिना हर कदम पर उनका मजाक बनाया गया।

विशेषशब्दा:- हिंदी साहित्य, इतिहास, प्राचीन समय

आज सम्पूर्ण विश्व में मानव अधिकारों की चर्चा ने एक आंदोलन का रूप ले लिया है, तथा समाज से बहिष्कृत पहचान को समाज की मुख्य धारा में लाने की अनेक कोशिशें हो रही हैं। समय-समय पर नारीवाद, आदिवासी, अल्पसंख्यक और दलित के अधिकारों को लेकर जो प्रयास हुए, उसका परिणाम साहित्य में आज हमें स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। नाम लेने पर लज्जा महसूस करने वाले समाज में आज तीसरी पहचान पर विचार हो रहा है। किन्नरों के अधिकारों को लेकर आज वैश्विक धरातल पर प्रयास हो रहे हैं। किन्नर या हिजड़ों के लिए तीसरी पहचान या तीसरे लिंग के रूप में किन्नरों के अधिकारों को मान्यता दे दी गई है।

साहित्य में आज के संदर्भ में अगर बात करें, तो समलैंगिक रचनाओं की संख्या अपनी पहचान और स्वीकृति के साथ बढ़ रही है। समलैंगिकता पर आधारित नई-नई लेख, कविताएं और कहानियां अपने नए-नए उद्देश्य विचारों और अनुभवों को पाठक के समक्ष लाने का प्रयास कर रही हैं। ये रचनाएं न केवल साहित्य से

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

उपेक्षित समलैंगिक समुदाय की पीड़ा और सदियों से किए जा रहे उनके संघर्ष को साहित्य के समक्ष उजागर कर वास्तविकता से परिचय करवाती हैं, बल्कि समाज में व्याप्त पूर्वाग्रहों और कठोर मानदंडों को भी चुनौती देने के लिए सामने आती हैं।

नए साहित्य में हमें स्पष्ट रूप से देखने को मिल रहा है कि एक तरफ मनुष्य अपने समलैंगिक रिश्तों को संसार के समक्ष प्रस्तुत करने लगे हैं, वहीं दूसरी तरफ साहित्य के रचनाकारों में महिला और पुरुष साहित्यकार भी इससे दूर नहीं हैं। वे भी अपनी रचनाओं में समलैंगिक विषय को उठाने लगे हैं। आरंभ के उपन्यासकारों ने अपने उपन्यास में स्पष्ट तौर पर समलैंगिकता को खुलकर तो नहीं, परंतु धीरे-धीरे दिखाने का प्रयास किया। हिंदी साहित्य को अगर गहराई से देखा जाए, तो हमें यह दृष्टिगोचर होता है कि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने अपनी रचना 'कुल्ली भाट' (1939) के द्वारा समलैंगिक विमर्श का बीज बोने का काम किया था।

'कुल्ली भाट' उपन्यास का नायक 'कुल्ली भाट' था, जिसका वास्तविक नाम पंडित पथरावदिन भट्ट था। भट्ट यानी वह जाति के ब्राह्मण थे, परंतु गांव के सभी लोग उनके साथ अछूतों जैसा व्यवहार करते थे। इसका कारण निराला ने संकेत दिया है, जिससे यह रचना उस समय की वास्तविकता का सही परिचय प्रस्तुत करती है। 'कुल्ली भाट' यानी पथरावदिन की पहचान गांव में एक समलैंगिक व्यक्ति के रूप में थी। जैसा कि हम जानते हैं, हमारे पारंपरिक समाज में समलैंगिकता को असभ्य माना जाता है, और समलैंगिक लोगों को समाज से दूर रखकर हमेशा हाशिए पर रखा जाता है। इतना कुछ होने के बाद भी, निराला ने 'कुल्ली भाट' को नायक बनाकर उसे साहित्य में स्थान दिया।

'न्यूज 18 हिंदी' पत्रिका में 26-02-2023 को एक आर्टिकल प्रकाशित हुआ, जिसकी विषयवस्तु थी 'आज से 75 साल पहले लिखा गया हिंदी का पहला लेस्बियन उपन्यास 'एकाकिनी'। इसमें बताया गया है कि "आज से करीब एक सौ साल पहले, 1922 में, जब पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' का कहानी संग्रह 'चॉकलेट' प्रकाशित हुआ, तो उसमें एक कहानी समलैंगिक संबंधों पर आधारित थी। उस समय इस कहानी को लेकर हिंदी साहित्य में बहुत विवाद हुआ था |"1 हिंदी के विख्यात सेवक और संपादक बनारसी दास चतुर्वेदी ने पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' की कहानी को अनुचित मानते हुए उसके खिलाफ घासलेटी साहित्य आंदोलन प्रारंभ किया, जो करीब दो वर्षों तक चला। उन्होंने 'चॉकलेट' कहानी को अश्लील मानते हुए महात्मा गांधी जी से 'उग्र' के लेखन की शिकायत की। परंतु जब गांधी जी ने 'चॉकलेट' को पढ़ा, तो उन्होंने चतुर्वेदी जी को पत्र लिखकर बताया कि उसमें किसी भी तरह की अश्लीलता नहीं है। लेकिन यह बात चतुर्वेदी जी ने साहित्य जगत को नहीं बताई। साठ के दशक में स्वयं दास जी ने इस रहस्य का उद्घाटन किया और बताया कि गांधी जी ने 'चॉकलेट' को

अश्लील नहीं माना था। हालांकि, हिंदी साहित्य में घासलेटी साहित्य के खिलाफ आंदोलन का ऐसा प्रभाव पड़ा कि कोई भी रचनाकार समलैंगिकता पर लिखने से बचने लगा, और उग्र एक बदनाम रचनाकार के रूप में पहचाने जाने लगे।

ऐसे विवादित समय में कोई महिला रचनाकार समलैंगिकता के सवालों को लेकर रचना करें यह कल्पना नहीं किया जा सकता था परंतु आशा सहाय ने 1948 ईस्वी में हिंदी साहित्य को उसका पहला लेस्बियन उपन्यास दिया |

जैसा कि हम जानते हैं, समलैंगिक संबंधों पर लिखी गई पहली उर्दू कहानी 1941 ईस्वी में इस्मत चुगताई द्वारा लिखी गई थी। यह कहानी एक छोटी सी लड़की के दृष्टिकोण से सुनाई गई है, जो रिश्ते में कहानी की प्रमुख पात्र सुंदर बेगम जान की भतीजी है। कहानी में देखा जाता है कि बेगम जान का जीवन शादी के पश्चात निराशा से भर जाता है। सुंदर बेगम जान के पति नवाब उम्र के हिसाब से उनसे बहुत बड़े हैं, और उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है, क्योंकि उनका वेश्याओं से कभी सामना नहीं हुआ।लेकिन समय के साथ पता चल जाता है कि उन्हें लड़कों में दिलचस्पी है इसी प्रकार कहानी में बेगम जान रब्बू नौकरानी के अनुपस्थिति में कथावाचक की यौन शोषण करती है और वह एक रात रजाई मिलने पर लाइट जलती है और कुछ ऐसा देखी है जो वह कभी नहीं देखना चाहती थी साथ ही कहानी में यह कभी भी नहीं बताया गया कि वह क्या है क्योंकि कहानी वही खत्म हो जाती है |

अतः इस प्रकार इसमें दो महिलाओं के बीच के संबंधों पर प्रकाश डाला गया है। परंतु 'एकाकिनी' में पाठक की कल्पना के लिए 'लिहाफ' कहानी की तुलना में बहुत कम स्थान छोड़ा गया है। इस प्रकार के रिश्तों में प्रवेश करने का विकल्प चुनने वाली स्त्रियों की उच्च यथार्थवादी और सहानुभूति युक्त छाप मनोवैज्ञानिक रूप में प्रस्तुत की गई है। उपन्यास लेखन के समय को ध्यान में रखते हुए, इसे उपन्यासकार की ओर से एक महत्वपूर्ण कदम माना जाता है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि इस उपन्यास की प्रस्तावना बिहार के प्रतिष्ठित साहित्यकार शिवपूजन सहाय द्वारा लिखी गई है, और उन्होंने उपन्यास के विषय की नवीनता की भी सराहना की।

अगर हम समकालीन हिंदी साहित्य की बात करें तो लिंग पहचान और महत्व के दायरे में स्त्री-पुरुष के संबंध को विस्तृत पैमाने पर रखकर लिखा गया है और अनेक तरह से समालोचना की कसौटी भी तैयार हुई है। परंतु तीसरे लिंग यानी किन्नरों को केंद्र में रखकर साहित्य की रचना पिछली शताब्दी में नगण्य थी। इसके अलावा, स्वयं को एलजीबीटी समुदाय में स्थान पाने वालों की पहचान के संघर्ष को भी साहित्य में शामिल कर पाठक वर्ग तक पहुंचने की आवश्यकता है। हालांकि, एलजीबीटी का संबंध सामान्यतः स्त्री-पुरुष के यौन रुचि से है, जबकि किन्नर का संबंध अधूरे जननांग के विषय से है। जिस

तरह समय-समय पर स्त्री, दलित या आदिवासी विमर्श को अपनी रचनाओं के माध्यम से साहित्य का विषय बनाया गया है, इसी प्रकार एलजीबीटी और किन्नर में इसका सर्वथा अभाव है। इसका स्पष्ट कारण उनमें शिक्षा और जागरूकता का अभाव और उनकी उपस्थिति का समाज में हाशिए के सबसे निचले पायदान पर होना है।

गहराई से देखें तो आधुनिक साहित्य में किन्नर समुदाय का उल्लेख मिलता है, लेकिन 21वीं सदी से पहले कोई विशेष रचना हमें देखने को नहीं मिलती। साहित्य में राही मासूम राजा की कहानी 'खलीक अहमद बुआ' शिव प्रसाद सिंह की कहानी "बिंदा महाराज" और सुभाष अखिल की कहानी "दर्मियाना" के साथ, जब नीरजा माधव ने अपना उपन्यास "यमदीप" लिखा, तब से ऐसा माना जाता है कि हिंदी में किन्नर विमर्श की नींव पड़ी। "यमदीप" हिंदी साहित्य का पहला उपन्यास है, जिसमें किन्नर समाज को केंद्रित किया गया है। इस उपन्यास की प्रमुख पात्र नाज बीवी है। उपन्यास में हम नाज बीवी के माध्यम से बनारस की किन्नर बस्ती को समझ सकते हैं।

किन्नर विमर्श में नया मोड़ हमें तभी देखने को मिलता है जब 2015 में लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी ने अपनी व्यथा को व्यक्त करने के लिए अपने हाथों में कलम थाम ली और 'मैं हिजरा, मैं लक्ष्मी' शीर्षक आत्मकथा को आवाज दी। इसी क्रम में 'पुरुष तन में फँसा मेरा मन' शीर्षक एक और आत्मकथा का महत्व भी उल्लेखनीय है। इसमें किन्नरों के जीवन को गहराई से चित्रित किया गया विशेषकर 21वीं सदी के दूसरे भाग में, अर्थात उत्तरार्ध में, हमें समलैंगिकता और किन्नरों को केंद्रित साहित्य लिखे जाने का प्रभाव अधिक दिखाई देता है, जिसमें कुछ प्रमुख उपन्यास हैं: महेन्द्र भीष्म की 'किन्नर कथा' (2012), 'मैं पायल' (2016) प्रदीप सौरभ की 'तीसरी ताली' (2011), निर्मला भुराड़िया की 'गुलाम मंडी' (2014), चित्रा मुद्गल की 'पोस्ट बाक्स नं. 203 नाला सोपारा' (2018), भगवंत अनमोल की 'जिंदगी 50-50' (2017), गिरिजा भारती की 'अस्तित्व' (2018), सुभाष अखिल की 'दरमियान' (2018), राजेश मलिक की 'आधा आदमी' (2018), मोनिका देवी की 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' (2019), हरभजन सिंह मल्होत्रा की 'ऐ जिंदगी तुझे सलाम' (2019) आदि।

अतः इस प्रकार हम देखते हैं कि इक्कीसवीं सदी में किन्नरों पर बहुत कुछ लिखा जा रहा है। बदलाव के लिए साहित्य ने अपना मुंह मोड़ लिया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. न्यूज 18 हिंदी (FEB 26 2023) आज से 75 साल पहले लिखा गया हिंदी का पहला लेस्बियन उपन्यास 'एकाकिनी'
2. https://hindi.news18.com/news/literature/first-hindi-lesbian-novel-ekakini-written-by-hindi-author-asha-sahay-lgbt-literature-aslil-sahitya-poet-vimal-kumar-5449501.html